(पृष्ठ 20 का शेष ...)

का विचार भी सच्चा नहीं है; वह तो बंध के मार्ग को ही मोक्ष का मार्ग समझकर उसका सेवन कर रहा है।

निश्चय मोक्षमार्ग ही सच्चा मोक्षमार्ग है। निश्चय अर्थात् अकेले शुद्ध आत्मा में रुचि-ज्ञान-रमणता-एकाग्रता ही यथार्थ वास्तविक शुद्ध उपादान से प्रगट हुआ सत्य मोक्षमार्ग है। यह नियम से मोक्षमार्ग है, इसके सेवन से मोक्ष अवश्य होता है - ऐसा नियम है और उसके कारणरूप (अर्थात् निमित्तकारण-रूप) व्यवहार है। ऐसे मोक्षमार्ग में दोनों प्रकार जैसे हैं, वैसे जानना चाहिए। दोनों को 'जानना' चाहिए, परन्तु दोनों को जानकर आदरणीय तो एक निश्चय सत्यार्थ मार्ग ही है - ऐसा समझे, तभी दोनों का सच्चा ज्ञान होता है।

स्वभाव के आश्रय से शुद्ध रत्नत्रय द्वारा मोक्ष को साधनेवाले साधक को अपनी भूमिका के अनुसार व्यवहार कैसा होता है, देव-गुरु-शास्त्र की तथा नव तत्त्व की पहचान कैसी होती है, उसे भी पहचानना चाहिए; उसको जो अन्यथा माने, उसने सच्चे मोक्षमार्ग को नहीं जाना। पर से विभक्त और स्वभाव से एकत्व - ऐसे शुद्धात्मा के आश्रय से जो रत्नत्रयरूप निर्मल पर्याय प्रगटी, वह निश्चय मोक्षमार्ग है। उसके साथ में जो व्यवहाररत्नत्रय है, वह स्वयं सच्चा मोक्षमार्ग नहीं है; परन्तु निमित्तरूप से उसको भी मोक्षमार्ग कहा जाता है; सो वह व्यवहार है, असत्यार्थ है - ऐसा समझना। उस समय की शुद्धता को मोक्षमार्ग जानना, सो अनुपचार है - सत्य है और उस समय के शुभराग को मोक्षमार्ग कहना, सो उपचार है - असत्य है। मोक्षमार्गी जीव को भूमिका के अनुसार दोनों प्रकार होते हैं, यह दिखाने के लिए 'द्विविध' कहा है। उनमें मोक्ष का सच्चा कारण एक ही है, दो नहीं। साधक को निश्चय सम्यक्त्व के साथ होने वाला वीतरागी देव-गुरु-शास्त्र की पूजनादि का शुभ विकल्प बंध का कारण होने पर भी उपचार से मोक्षमार्ग कहलाता है। मोक्षमार्ग के निमित्त का ज्ञान कराने के लिए उसको व्यवहार कहा।

व्यवहार कारण है; परन्तु किसका ? कि निश्चय मोक्षमार्ग का; अतएव जहाँ सच्चा मोक्षमार्ग विद्यमान है, वहीं पर वह उसका कारण उपचार से है; परन्तु जहाँ सच्चा मोक्षमार्ग है ही नहीं, वहाँ कारण किसका कहना ? निश्चय का तो लक्ष्य भी न हो और अकेले व्यवहार के सेवन से मोक्षमार्ग प्रगट हो जाये ह्न ऐसा तो कभी नहीं होता। अत: मोक्षार्थी जीवों को सच्चे मोक्षमार्ग को अच्छी तरह पहचान कर उसका उद्यम करना चाहिए। **(क्रमश:)**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 29 329 अंक : 5

ऐसे जैनी मुनिराज...

ऐसे जैनी मुनिराज, सदा उर मो बसो।। टेक।।
जिन समस्त परद्रव्यनि मांहीं, अहंबुद्धि तजि दीनी।
गुण अनन्त ज्ञानादिक मम पुनि, स्वानुभूति लखि लीनी।।
ऐसे जैनी मुनिराज...।। 1।।
जे निज बुद्धिपूर्व रागादिक, सकल विभाव निवारैं।
पुनि अबुद्धिपूर्वक नाशन को, अपनी शक्ति संभारैं।।
ऐसे जैनी मुनिराज...।। 2।।
कर्म शुभाशुभ बंध उदय में, हर्ष विषाद न राखैं।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप, भाव सुधारस चाखैं।।
ऐसे जैनी मुनिराज...।। 3।।
पर की इच्छा तजि निजबल सजि, पूरव-करम खिरावैं।
सकल कर्म तैं भिन्न अवस्था, सुखमय लखि चित चावैं।।
ऐसे जैनी मुनिराज...।। 4।।
उदासीन शुद्धोपयोगरत, सबके दृष्टा ज्ञाता।
बाहिज रूप नगन समताकर, 'भागचंद' सुखदाता।।
ऐसे जैनी मुनिराज...।। 5।।

– कविवर पण्डित भागचंदजी

छहढाला प्रवचन

मोक्षमार्ग की आराधना का उपदेश

आतम को हित है सुख, सो सुख आकुलता-बिन कहिए,
आकुलता शिवमाहिं न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिए।
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव, मग सो द्विविध विचारो,
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय, कारण सो व्यवहारो ।।१।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

बाह्य में अनुकूलता का होना सुख और प्रतिकूलता का होना दु:ख - ऐसा नहीं है। धनवान सुखी और निर्धन दु:खी - ऐसा भी नहीं है; नीरोगता में सुख और रोग में दुख - ऐसा भी नहीं है। बाहर की दरिद्रता में न दु:ख है और न लाखों-अरबों रुपये के ढेर में सुख है। इन दोनों ओर के झुकाव में आकुलता से जीव दु:खी है। चैतन्यप्रभु आत्मा ही एक ऐसा है, जिसको देखते ही सुख हो। आत्मा ही सुख का भंडार है; परन्तु उसकी पहचान नहीं है। सुख तो आत्मा का अपना निजवैभव है, जड़वैभव में वह नहीं होता।

भाई ! तुम्हें सुखी होना है न ? हाँ; तो सुख कैसा होता है और उसकी प्राप्ति कैसे होती है - यह पहचानना चाहिए। आत्मा के सहज स्वभाव के बीच में यदि राग की आड़ न लगावे तो आत्मा स्वयमेव निराकुल सुखरूप से अनुभव में आयेगा। सुखस्वभाव तो आत्मा ही है। निराकुलता सुख है और वह आत्मा की मुक्तदशा है; अत: सुख के अभिलाषी को मोक्ष के मार्ग में लगना चाहिए। मोक्षमार्ग अर्थात् रागरहित सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र। मोक्ष निराकुल है और उसका मार्ग भी निराकुल है, राग में तो आकुलता है, दु:ख है।

सिद्ध व अरिहन्त भगवंत बाहर के किसी भी साधन के बिना स्वयमेव अनन्त अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव करते हैं। अभी इस समय भी सीमंधर भगवान एवं अन्य लाखों अरिहंत भगवंत ऐसे अनन्त आनन्द में विराजमान हैं; अनन्त सिद्ध भगवंत लोक के शिखर पर विराज रहे हैं। प्रत्येक आत्मा ऐसे ही अतीन्द्रिय सुख से

भरा है; उसको पहचानकर उसके ही आश्रय से मोक्षसुख साधने के उपाय में लगना चाहिए। श्री जिनदेव द्वारा कथित आत्मशुद्धिरूप वीतरागी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र ही सच्चा मोक्षमार्ग है। वीतरागी रत्नत्रय कहो या निश्चय रत्नत्रय कहो, वह मोक्ष के लिए नियम से कर्तव्य है, अत: उसे 'नियम' कहा है; उसमें राग का अभाव सूचित करने के लिये 'सार' विशेषण लगाया है। ऐसे शुद्ध रत्नत्रयरूप जो नियमसार है, वही परमसुख का मार्ग है।

अब कहते हैं कि ऐसे मोक्षमार्ग का दो प्रकार से विचार करो; एक सत्यार्थरूप सच्चा मोक्षमार्ग अर्थात् निश्चय मोक्षमार्ग है और उपचारकारण है, सो व्यवहार है। जो निमित्तकारण है, वह स्वयं मोक्षमार्ग न होते हुए भी उपचार से उसको मोक्षमार्ग कहना व्यवहार है। वह सत्यार्थ नहीं है; परन्तु असत्यार्थ है, अभूतार्थ है। सच्चे मोक्षमार्ग को मोक्षमार्ग कहना सत्यार्थ है, वह निश्चय है।

यहाँ सत्यार्थ को ही निश्चय कहा है, यह बात महत्त्वपूर्ण है। निश्चय को सत्यार्थ कहने का अर्थ यह हुआ कि व्यवहार असत्यार्थ है। निर्विकल्प शुद्ध आत्मा के आश्रय से जो रत्नत्रयरूप शुद्ध परिणति है, वह मोक्षमार्ग है, वही सच्चा मोक्षमार्ग है - ऐसा समझना। आंशिक शुद्धता पूर्ण शुद्धता का कारण है। इसमें कारण और कार्य की एक जाति होने से यह निश्चय कारण है। परन्तु उसके साथ की अशुद्धता (शुभराग) शुद्धता का सच्चा कारण नहीं है; परन्तु शुद्धता के साथ में भूमिका के अनुसार देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा; नव तत्त्व का ज्ञान और पंच महाव्रतादि के विकल्पों को भी 'मोक्षमार्ग का सहकारी' जानकर (वे स्वयं मोक्षमार्ग नहीं हैं, परन्तु मोक्षमार्ग में साथ-साथ रहने वाले हैं, अत: सहकारी जानकर) उपचार से मोक्षमार्ग कहते हैं; परन्तु वह सत्यार्थ मोक्षमार्ग नहीं है, अत: उनको व्यवहार कहा, गौण कहा और असत्यार्थ कहा; वे अशुद्ध हैं, पराश्रित हैं और शुद्ध आत्मा के आश्रय से रागरहित सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग निश्चय है, मुख्य है, सत्यार्थ है, शुद्ध है और स्वाश्रित है।

इसप्रकार 'द्विविध' मार्ग में एक ही सत्यार्थ है - **'जो सत्यारथरूप सो निश्चय'** एक निश्चय मोक्षमार्ग ही सच्चा है। इसप्रकार मोक्षमार्ग के स्वरूप का जो विचार किया जाये, वह विचार सच्चा है; परन्तु जो व्यवहार को ही सच्चा मोक्षमार्ग समझकर उसमें ही लगा रहे और निश्चय मोक्षमार्ग को न पहचाने तो उसको मोक्षमार्ग

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

नियमसार प्रवचन

निज परमात्मतत्त्व को बंधस्थान नहीं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 40वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

णो ठिदिबंधट्ठाणा पयडिट्ठाणा पदेसठाणा वा।
णो अणुभागट्ठाणा जीवस्स ण उदयठाणा वा।।40।।
स्थिति अनुभाग बंध एवं प्रकृति परदेश के।
अर उदय के स्थान आतम में नहीं ह्न यह जानिये।।40।।

जीव को स्थितिबंध स्थान नहीं है, प्रकृति स्थान नहीं हैं, प्रदेश स्थान नहीं हैं, अनुभाग स्थान नहीं हैं अथवा उदय स्थान नहीं हैं।

(गतांक से आगे...)

द्रव्यकर्मों के स्थितिबन्धस्थान तथा उसप्रकार की जीव की पर्याय की योग्यता शुद्धजीव में नहीं है। निजपरमात्मतत्त्व को वास्तव में द्रव्यकर्म के जघन्य, मध्यम अथवा उत्कृष्ट स्थितिबन्ध स्थान नहीं हैं।

जीव अपने स्वभाव को चूककर राग-द्वेषादि करता है तब अल्पस्थिति के, मध्यमस्थिति के अथवा उत्कृष्टस्थिति के पुद्गलकर्म बंधते हैं, वह जड़कर्मों की स्थिति है और उन कर्मों का सम्बन्ध पर्याय के साथ है; किन्तु शुद्धजीव में ऐसे स्थितिबन्धस्थान नहीं हैं। पुनः जितनी स्थिति का कर्म बंधता है - उसप्रकार की योग्यता जीव की विकारी पर्याय में रहती है; किन्तु वह योग्यता तथा कर्म की स्थिति शुद्धजीव में नहीं है। जितने प्रमाण में प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभागबंध जड़कर्म में पड़ता है, उतने प्रमाण में योग्यता आत्मा की एक समय की पर्याय में रहती है। चारों प्रकार की योग्यता आत्मा की आत्मा के कारण और पुद्गलकर्म की पुद्गलकर्म के कारण से है। कोई किसी के कारण से नहीं है; किन्तु अपने-अपने कारण से ही है।

यहाँ स्थितिबन्ध की बात चलती है। जैसे आम का वृक्ष अमुक वर्ष में पके और अमरूद का अमुक वर्ष में - बीज की फलरूप होने की इतनी स्थिति है; उसीप्रकार आत्मा की पर्याय में होनेवाले परिणामानुसार अमुक स्थिति के कर्म बंधते हैं - वह

स्थितिबंध है; परन्तु उन कर्मो का सम्बन्ध पर्याय में है। एक समय की पर्याय अभूतार्थ है - इसलिए शुद्धजीव में उसका अभाव कहा है। शुद्धत्रिकालीस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करना सम्यग्दर्शन का कारण है।

द्रव्यकर्मों के प्रकृतिबंधस्थान तथा उसप्रकार की जीव की पर्याय की योग्यता शुद्धजीव में नहीं है।

ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्मों का उन-उन कर्मों के योग्य पुद्गल-द्रव्य का स्व-आकार प्रकृतिबंध है। उनके स्थान निरंजन निज-परमात्मतत्त्व के नहीं हैं।

जीव जैसे भाव करता है, उसीप्रकार के कर्मों की प्रकृति का बंध होता है। ज्ञानावरणीकर्म ज्ञान को रोके, दर्शनावरणीकर्म दर्शन को रोके - इसप्रकार जीव को संसार में भिन्न-भिन्न कर्मों की प्रकृति बंध निमित्तरूप होता है और उसीप्रमाण में जीव की एक समय की पर्याय में योग्यता है। उस योग्यता का कर्म की प्रकृति बंधाने में निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है; किन्तु वह योग्यता और निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध त्रिकालीस्वभाव में नहीं हैं। त्रिकालीस्वभाव तो एकरूप शुद्ध है। कोई मनुष्य कई बार चोरी करे इसलिए वह सदैव चोरी करेगा ही - ऐसा कोई नियम नहीं है, वह उसका स्वरूप नहीं है। चोरी क्षणिक अपराध है, त्रिकाल में वह अपराध नहीं है। त्रिकाली शुद्धस्वभाव में राग-द्वेष तथा हीनता की योग्यता वाली पर्याय नहीं है तथा प्रकृतिबंध भी नहीं है। ऐसे त्रिकालीस्वभाव की श्रद्धा करने से पर्याय में जो कर्म के साथ निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध के क्रमशः टूटने पर वीतराग दशा की प्राप्ति होती है।

द्रव्यकर्म के प्रदेशबंधस्थान तथा उसीप्रकार की जीव की पर्याय की योग्यता शुद्धजीवों में नहीं है।

अशुद्ध अन्तःतत्त्व के (अशुद्ध आत्मा के) और पुद्गलकर्म के प्रदेशों का परस्पर प्रवेश प्रदेशबन्ध है। ये बंध के स्थान भी निरंजन निजपरमात्मतत्त्व के नहीं हैं।

विकारीपर्याय को अशुद्ध अन्तःतत्त्व कहते हैं, क्योंकि वह अपनी एक समय की पर्याय है। कर्म को बाह्यतत्त्व तथा त्रिकाली शुद्धस्वभाव को शुद्ध अन्तःतत्त्व कहा है। जीव अपना स्वभाव चूककर पर्याय में ज्ञान की हीनता, दर्शन की हीनता तथा राग-द्वेषादि भाव करता है, वह मलिनता है, उस मलिनता के योग्य कर्म का बंध पड़ता है और वे जड़कर्म आत्मा के एक क्षेत्र में आकर रहते हैं। इसप्रकार मलिन पर्याय एवं जड़कर्म का निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है, वही प्रदेशबन्ध कहा जाता है। यदि शुद्धस्वभाव की दृष्टि से देखा जावे तो मलिनता और जड़कर्म का प्रदेशबन्ध शुद्धस्वभाव में है ही नहीं। यदि स्वभाव में भी मलिनता और वह सम्बन्ध हो तो स्वभाव में कभी उसका अभाव नहीं हो सकता। उसप्रकार की योग्यता तो पर्याय में उसके अपने कारण

ही है, कर्म के कारण वह मलिनता नहीं है। वह योग्यता मात्र एक समय की ही है। शुद्धस्वभाव में वह योग्यता नहीं है। गन्ने के ऊपर की छाल गन्ने का वास्तविक स्वरूप नहीं है, उस छाल को दूर करने पर सफेद मीठे रसवाला गन्ना निकलता है; उसीप्रकार विकारीभाव गन्ने के ऊपरी छिलके के समान हैं। अशुद्धतत्त्व से रहित त्रिकालीस्वभाव निजपरमात्मतत्त्व अन्दर सफेद और मीठे गन्ने के समान आनन्दकंद, ज्ञान-दर्शन-चारित्रादि शक्ति से भरपूर पड़ा है। पर्यायबुद्धि एवं एक समय के प्रदेशबन्ध का निषेध करके शुद्धस्वभाव की दृष्टि करना ही सम्यग्दर्शन का कारण है।

कर्म के अनुभागबन्धस्थान तथा जीव की पर्याय की उसप्रकार की योग्यता शुद्धजीव में नहीं है।

शुभाशुभकर्म की निर्जरा के समय सुख-दुःखरूप फलदान की शक्तिवाला अनुभागबंध है। इसके स्थानों का भी अवकाश निरंजन निजपरमात्मतत्त्व में नहीं है।

जीव जब अपने शुद्धस्वभाव से चूकता है तभी पर्याय में राग-द्वेष होता है और जैसे रसवाले तीव्र या मन्द परिणाम करता है वैसे ही रसवाले-अनुभागवाले कर्मों का बन्ध पड़ता है। कर्म में रस होता है, उसके निमित्त से सुख-दुःखरूप फल आता है; किन्तु कर्म का अनुभाग कर्म में होता है; वह आत्मा को अनुभाग नहीं देता तथा आत्मा की पर्याय का अनुभाग आत्मा की पर्याय में होता है; दोनों ही स्वतंत्र हैं तथापि पर्याय में एक-दूसरे को निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। यदि शुद्धस्वभाव की दृष्टि से देखें तो उस पर्याय की योग्यता तथा कर्म के अनुभागबन्धस्थान शुद्धजीव में नहीं हैं। ज्ञान-दर्शन की हीनावस्था, राग-द्वेषादि की अवस्था के असंख्य प्रकार पर्याय में होते हैं किन्तु ध्रुवशुद्धचैतन्य एकाकार स्वभाव में उनका अभाव है; अतः शुद्धस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करना ही धर्म का कारण है।

द्रव्यकर्म अर्थात् ज्ञानावरणादि जड़कर्मों का उदय तथा उस ओर के लक्ष्य से होनेवाली पर्याय की हीनता एवं राग-द्वेषादि को भावकर्म का उदय कहते हैं। ज्ञान, दर्शन, वीर्य की हीनता, श्रद्धा तथा चारित्र की विपरीतता इत्यादि अनेक प्रकार की योग्यता पर्याय में है; किन्तु वह मात्र एक समय की अवस्था ही है। एकसमय की हीनता अथवा विपरीतता तथा जड़कर्म के उदय का त्रिकाली शुद्धस्वभाव में अभाव है। अशुद्धता ने कभी स्वभाव में प्रवेश किया ही नहीं; इसलिये ऐसे त्रिकाली शुद्धस्वभाव की श्रद्धा-ज्ञान करने से धर्म होता है। कर्म, विकार अथवा पर्याय के आश्रय से धर्म कभी नहीं होता। अतः यहाँ गाथा में कहा कि प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, प्रदेशबंध, जड़कर्म के उदय के ऊपर का तथा उसप्रकार की एक समय की पर्याय की योग्यता के ऊपर का भी लक्ष छोड़कर शुद्धजीवतत्त्व का लक्ष करे तो धर्मदशा प्रगट होगी। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : राग-द्वेष को जीव की पर्याय कहा है और फिर उसी को निश्चय से पुद्गल का परिणाम भी कहा। अब हम क्या निश्चय करें ?

उत्तर : राग-द्वेष है तो जीव का ही परिणाम; किन्तु वह पुद्गल के लक्ष्य से होता होने से और जीव का स्वभावभाव न होने से तथा स्वभावदृष्टि कराने के प्रयोजन से, पुद्गल का कहा गया है; क्योंकि निमित्ताधीन होने वाले भाव को निमित्त का भाव है, पुद्गल का भाव है - ऐसा कहने में आता है।

प्रश्न : प्रथम भूमिका में जिज्ञासु जीव राग-द्वेष के भाव को अपना माने या पुद्गल का माने ?

उत्तर : रागादिभाव अपने में अपने अपराध से होते हैं - ऐसा जानकर, श्रद्धा में से निकाल दें अर्थात् ऐसी श्रद्धा करे कि यह रागादि के परिणाम मेरे त्रिकाली स्वभाव में नहीं हैं।

प्रश्न : राग आत्मा का है या पुद्गलकर्म का ? दोनों प्रकार के कथन शास्त्र में आते हैं। कृपया रहस्य बतलाइये ?

उत्तर : वस्तु की सिद्धि करनी हो, तब राग व्याप्त है और आत्मा व्यापक है अर्थात् राग आत्मा का है - ऐसा कहा जाता है। जब दृष्टि शुद्धचैतन्य की हुई, सम्यग्दर्शन हुआ, तब निर्मलपर्याय व्याप्य और आत्मा व्यापक है। सम्यग्दृष्टि का जो राग है, वह पुद्गल कर्म का कहा जाता है क्योंकि ज्ञानी जीव दृष्टि अपेक्षा राग से भिन्न पड़ गया है, इसलिए उसके राग में कर्म व्यापता है - ऐसा कहा जाता है।

प्रश्न : ज्ञानी द्रव्यदृष्टि के बल से राग को पुद्गल का मानता है तो क्या जिज्ञासु जीव भी राग को पुद्गल का मानता है ?

उत्तर : हाँ, जिज्ञासु जीव भी वस्तु के स्वरूप का चिन्तवन करते समय राग को आत्मा का नहीं मानता, पुद्गल का ही मानता है। राग तो उपाधिभाव है, पराश्रय से उत्पन्न होने के कारण मेरा नहीं है, पुद्गल का है-ऐसा विचार जिज्ञासु जीव करता है।

प्रश्न : राग पुद्गल का परिणाम है, पुद्गल का परिणाम है.....ऐसा ही कहते

रहेंगे तो राग का भय ही नहीं रहेगा और फिर तो महादोष उत्पन्न होगा ?

उत्तर : ऐसा नहीं होगा, राग की रुचि ही उत्पन्न नहीं होगी। राग की रुचि छोड़ने के लिये ही ऐसा जानना चाहिये कि राग पुद्गल का परिणाम है। भाई ! शास्त्र में कोई भी कथन स्वच्छन्दता उत्पन्न करने के लिये नहीं किया है, वीतरागता उत्पन्न करने के लिये ही किया है।

प्रश्न : भगवान की भक्ति आदि का शुभराग ज्ञानी को भी आता है और उस राग में पुद्गल ही व्याप्त होता है - ऐसा कहा जाता है; परन्तु यह बात बराबर नहीं लगती?

उत्तर : भाई ! राग तो जीव का ही परिणाम है; परन्तु पर के लक्ष्य से होता है, जीव का स्वभाव नहीं है, उपाधिभाव है; अत: उससे निवृत्त होने के लिये उसे पुद्गलकर्म भी कहा है।

प्रश्न : राग आत्मा का नहीं तो क्या राग जड़ में होता होगा ?

उत्तर : राग जीव का स्वाभाविक परिणाम नहीं है, इसलिये शुभाशुभ राग को जड़ और अचेतन कहा है। राग आत्मा का स्वरूप है ही नहीं, चैतन्यपुञ्ज कभी रागरूप हुआ ही नहीं। आत्मा के भान बिना अनन्तबार नववें ग्रैवेयक में गया, किन्तु सम्यग्दर्शन बिना लेशमात्र भी सुख नहीं पाया। अलिंगग्रहण के बोल में भी यति की क्रिया पंचमहाव्रतादि का आत्मा में अभाव कहा है। समयसार गाथा 181 से 183 तक में भी कहा है कि जाननक्रियारूप आत्मा और क्रोधादि क्रियारूप आस्रव - ये दोनों अत्यंत भिन्न हैं। उनके प्रदेश भिन्न होने से दो वस्तुओं की सत्ता ही भिन्न-भिन्न है। बात यह है कि आस्रव के ऊपर से दृष्टि हटाना और द्रव्य के ऊपर दृष्टि देना - यहाँ यही अभीष्ट है। जहाँ तेरी वस्तु है नहीं, वहाँ से दृष्टि उठा ले और जहाँ तेरी वस्तु है, वहाँ दृष्टि डाल; तभी तुझे सुख और शान्ति मिलेगी।

प्रश्न : क्या राग आत्मा से भिन्न है और क्या यह निषेध करने योग्य भी है ?

उत्तर : हाँ, राग आत्मा से भिन्न है; राग में ज्ञानगुण नहीं है और जिसमें ज्ञानगुण न हो, उसको आत्मा कैसे कहा जाय - इसलिये राग है, वह आत्मा नहीं है। आत्मा की शक्ति के निर्मल परिणाम से राग का परिणाम भिन्न है। आत्मा से भिन्न कहो या निषेध योग्य कहो - एक ही बात है। मोक्षार्थी को जिसप्रकार पराश्रित राग का निषेध है, उसीप्रकार पराश्रित ऐसे सर्व व्यवहार का भी निषेध ही है, राग और व्यवहार दोनों एक ही कक्षा में हैं - दोनों ही पराश्रित होने से निषेध योग्य हैं और उनसे विभक्त चैतन्य का एकत्वस्वभाव वही परम आदरणीय है।

समाचार दर्शन -

एक गौरवशाली शुरुआत –

प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना प्रारंभ

देश-विदेश में निर्मित होने वाले जिनमन्दिरों की प्रतिष्ठाविधि संपन्न कराने हेतु प्रतिष्ठाचार्यों की बढती हुई मांग की पूर्ति करने के उद्देश्य से तीर्थधाम मङ्गलायतन अलीगढ एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर ने प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना का शीघ्र शुभारम्भ करने का निर्णय लिया है।

इस सम्पूर्ण योजना का निर्देशन लोकप्रिय प्रवचनकार तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल करेंगे। प्रतिष्ठाविधि का व्यवस्थित पाठ्यक्रम एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करने का उत्तरदायित्व लोकप्रिय प्रतिष्ठाचार्य ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ.राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंङ्गलायतन को सौंपा गया है। सम्पूर्ण शिविर योजना का संयोजन पण्डित देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री मंङ्गलायतन एवं पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर करेंगे।

इस अभिनव योजना हेतु पाठ्यक्रम निर्माण एवं अन्य आवश्यक कार्यवाही प्रारंभ कर दी गयी है। विस्तृत कार्ययोजना तैयार होने पर शीघ्र प्रकाशित की जायेगी।

समाज के प्रतिष्ठाचार्यों, विद्वानों एवं प्रबुद्धवर्ग से इस सम्बन्ध में समुचित सुझावों एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। कृपया अपने सुझाव एवं मार्गदर्शन इस पते पर प्रेषित करें –

(1) डॉ. हुकमचंद भारिल्ल निर्देशक, प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना,
पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)

(2) पण्डित देवेन्द्रकुमार जैन संयोजक, प्रतिष्ठाचार्य शिक्षण-प्रशिक्षण योजना,
तीर्थधाम मङ्गलायतन, अलीगढ-आगरा मार्ग, सासनी,
जिला-महामाया - 204216 (उ.प्र.)

परीक्षा तिथि निश्चित

– श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड जयपुर की शीतकालीन परीक्षा 2011 की तिथियाँ 29, 30 और 31 जनवरी 2011 निश्चित की गई है। पूर्ण टाईम टेबल शीघ्र प्रकाशित किया जावेगा।

– संबंधित परीक्षा केन्द्रों को परीक्षा सामग्री यथा समय डाक द्वारा भेज दी जावेगी।

– जिन परीक्षा केन्द्रों ने अभी तक भी छात्रों के प्रवेश फार्म भरकर नहीं भेजे हैं, कृपया वे तत्काल भरकर परीक्षाबोर्ड कार्यालय जयपुर को भिजवा देवें। **– ओ.पी.आचार्य**

प्रबंधक – परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर

आध्यात्मिक व्याख्यानमाला संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर दिनाँक 3 से 7 नवम्बर तक श्री पंचकल्याणक पूजन विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र.हेमचंदजी हेम भोपाल, ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, पण्डित दिनेशभाई शहा एवं डॉ. उज्ज्वलाबेन शहा मुम्बई के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त हुआ।

प्रात: स्व. शांताबेन एवं श्री मुकुन्दभाई खारा मुम्बई की बहन स्व.लाभूबेन जगजीवनदास जैन परिवार दिल्ली द्वारा आयोजित पंचकल्याणक मण्डल विधान के उपरांत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

पत्रिका विमोचन एवं स्वाध्याय मण्डप का उद्घाटन

मङ्गलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 16 से 23 दिसम्बर, 2010 तक होनेवाले श्री आदिनाथ दि.जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा व गजरथ महोत्सव की मुख्य पत्रिका का विमोचन समारोह दिनांक 3 नवम्बर को रखा गया।

आयोजन में श्री पवन जैन द्वारा पत्रिका का वाचन किया गया, तदुपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से उद्घाटन विधि सम्पन्न हुई। सभा की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली ने की। इस प्रसंग पर पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सी. एस. जैन देहरादून, श्रीमती बीना जैन व श्री राजेन्द्र जैन देहरादून एवं श्री पी. के. जैन रुडकी मंचासीन थे।

इसी प्रसंग पर **मङ्गलायतन** परिसर में नवनिर्मित श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन का भव्य उद्घाटन श्रीमती भारतीबेन परिवार मुम्बई एवं श्री पंकजभाई झबेरी परिवार मुम्बई के करकमलों से हुआ। ज्ञातव्य है कि इस स्वाध्याय भवन में आचार्य कुन्दकुन्द शोध संस्थान की भी स्थापना की जा रही है।

नवीन प्रकाशन

लब्धिसार और क्षपणासार पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत टीका सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का हिन्दी अनुवाद डॉ.उज्ज्वला शहा ने किया है। शास्त्र प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति 125/- रुपये (डाकखर्च सहित) निम्न पते पर भेजें ह्न

पण्डित दिनेशभाई शहा, 157/9 निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई - 400022, फोन-(022) 24073581

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

मङ्गलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ दिनाँक 2 से 7 नवम्बर तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं श्री आदिनाथ-कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट अलीगढ के संयुक्त तत्त्वावधान में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सभा की अध्यक्षता श्री अच्युतानन्दजी मिश्र ने की। मुख्य अतिथि श्री अभिनन्दनकुमारजी जैन सहारनपुर, उद्घाटनकर्त्ता श्री के.सी. झांझरी औरंगाबाद एवं ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा द्वारा प्रौढकक्षा के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: मुख्य प्रवचनों में प्रारंभ के दो दिनों तक तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित विमलचंदजी झांझरी व पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन के सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में व्याख्यानमाला के अन्तर्गत पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित शांतिकुमारजी महिदपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत श्री पवनजी जैन अलीगढ, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि के विविध विषयों पर स्वाध्याय का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

दिनांक 6 नवम्बर को धूम-धाम से निर्वाणोत्सव मनाया गया।

शिविर एवं विधान सानन्द संपन्न

सोनागिर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान आगम मंदिर में दिनांक 15 से 17 अक्टूबर तक श्री भक्तामर मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर का आयोजन युवा फैडरेशन दिलशाद गार्डन दिल्ली के तत्त्वावधान में हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन विधान एवं गुरुदेवश्री के सी.डी प्रवचनों के उपरान्त पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त डॉ. मुकेशजी 'तन्मय' के भक्तामर स्तोत्र पर एवं वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित जवाहरलालजी बड़कुल, डॉ.आर.के. जैन विदिशा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित पूरनचन्दजी, डॉ. विनोदजी शास्त्री, पण्डित केशरीमलजी, श्री बसंतजी बड़जात्या एवं पण्डित अशोकजी शास्त्री दिल्ली का समागम प्राप्त हुआ।

विधान का आयोजन श्रीमती अल्कादेवी नरेन्द्रजी परिवार बाहूबली एन्क्लेव दिल्ली द्वारा किया गया। ध्वजारोहण श्री प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से हुआ। मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी एवं श्री आदीशजी जैन दिल्ली थे।

डॉ. हुकमचंद भारिल्ल स्वाध्याय भवन का शिलान्यास समारोह सम्पन्न

हेरले-कोल्हापुर (महा.) : सर्वोदय स्वाध्याय समिति हेरले विगत पंद्रह वर्षों से महाराष्ट्र और कर्नाटक प्रान्त में प्रशिक्षण शिविर, ग्रुप शिविर, बालसंस्कार शिविर, पाठशाला संचालन इत्यादि के माध्यम से तत्त्वप्रचार का कार्य सुचारुरूप से कर रही है। इसमें श्री दिलीपभाई शाह-अहिंसा चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई का विशेष सहयोग रहा है। तत्त्वप्रचार की इन गतिविधियों को स्थायित्व व गति प्रदान करने हेतु एक स्थान विशेष की आवश्यकता अनेक वर्षों से महसूस की जा रही थी, अत: कोल्हापुर शहर से मात्र 12 कि.मी. दूर हेरले ग्राम (जहाँ 15 शास्त्री विद्वान हैं) में 40 हजार वर्ग फीट भूमि स्थानीय दातारों के सहयोग से क्रय कर ली गयी है। इस भूमि पर जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन, विद्यालय, वाचनालय, छात्रावास, विद्वत निवास, भोजनशाला आदि के निर्माण की योजना है। इसमें से प्रथम चरण के रूप में स्वाध्याय भवन के शिलान्यास का कार्यक्रम दिनाँक 14 व 15 नवम्बर को अनेक मांगलिक आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ।

दिनाँक 14 नवम्बर को जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील, पण्डित महेशजी पाटील एवं पण्डित उमेशजी शास्त्री के विविध विषयों पर प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित संयमजी शास्त्री ने **सप्त व्यसन** विषय पर लघु नाटिका प्रस्तुत की। दोपहर 3 बजे डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल परिवार एवं शिलान्यासकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार का सभी साधर्मियों ने गाजे बाजे के साथ बड़ी धूमधाम से स्वागत किया, तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल का मांगलिक उद्बोधन हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत आचार्य विद्यानंदजी महाराज के सानिध्य में सन् 2006 में दिल्ली में संपन्न समयसार सप्ताह की वीडियो सी.डी. दिखाई गई। इसके पश्चात् डॉ. भारिल्ल का मार्मिक प्रवचन हुआ।

दिनाँक 15 नवम्बर को प्रात: बड़ी धूमधाम से निकली शोभायात्रा में हजारों साधर्मी भाई-बहन मंगल कलश, स्वर्ण और रजत ईंटें लेकर शिलान्यास स्थल पर पहुँचे। जहाँ घटप्रभा निवासी अण्णासाहेब सिद्धाप्पा खेमलापुरे परिवार द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

सभा की अध्यक्षता मुख्य शिलान्यासकर्त्ता श्री प्रकाशचंदजी सेठी जयपुर ने की। मंचासीन अतिथियों में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अण्णासाहेब खेमलापुरे, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित महावीरजी पाटील, श्री सुभाषजी भोजे, श्री शांतिनाथ खोत, श्री भूपालजी आलमान (अध्यक्ष-दि.जैन समाज हेरले), श्री एन.एस. पाटील, श्री ए.बी. चौगुले, श्री रियाज जमादार (सरपंच-हेरले), श्री राजगोंड पाटील, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती इन्दुमती खेमलापुरे, श्रीमती शशी सेठी आदि उपस्थित थे। ब्र.यशपालजी जैन जयपुर ने दातार का विस्तृत परिचय दिया और निर्माणाधीन भवन का नाम 'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल स्वाध्याय भवन' घोषित किया।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि डॉ. भारिल्ल के नाम से बननेवाला यह स्वाध्याय भवन अध्यात्म का एक आदर्श केन्द्र बनेगा। श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा कि गुरुदेवश्री के पश्चात् डॉ.

भारिल्ल ने समयसार का सार जन-जन तक पहुँचाया है; अत: डॉ. भारिल्ल के नाम के साथ यह भवन समयसार भवन के रूप में विख्यात रहेगा। गांव की जैन समाज कमेटी के अध्यक्ष श्री भूपालजी आलमान ने कहा कि इस गांव का जैन समाज इस योजना में पूर्णरूप से शामिल होगा और सहयोग देगा।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि 24 तीर्थङ्करों, आचार्य धरसेन, कुन्दकुन्द, समन्तभद्र आदि आचार्यों और पण्डित टोडरमलजी, पण्डित बनारसीदासजी, पण्डित सदासुखदासजी, पण्डित दौलतरामजी आदि पण्डितों ने जो सच्चा दि.जैन धर्म अपनाया उसी का अनुसरण गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने किया। विगत 50 वर्षों से गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने हमें शुद्ध तत्त्वज्ञान और सच्चा दिगम्बर पन्थ बताया, उन्हीं का अनुकरण हमने किया है। इसमें किसी प्रकार का संदेह और विवाद नहीं है। नया मंदिर बनने से किसी भी प्रकार की फूट नहीं पड़ेगी; अपितु एकता और अखण्डता बनी रहेगी। समाज की एकता और अखण्डता के लिये हम हर कीमत पर सहायता करेंगे। सर्वोदय स्वाध्याय समिति के तत्त्वप्रचार के कार्य की डॉ. भारिल्ल ने बहुत प्रशंसा की।

सभा के पश्चात् श्री प्रकाशचंदजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों द्वारा शिलान्यास विधि संपन्न हुई। उन्होंने अपने पिता स्व.जमनालालजी सेठी की स्मृति में इस भवन के निर्माण में अपनी ओर से पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की।

दोपहर में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप प्रवचन के पश्चात् श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् दृष्टि का विषय, पंच लब्धि एवं सम्यग्दर्शन का स्वरूप पर डॉ. भारिल्ल का मार्मिक प्रवचन हुआ।

समिति के अध्यक्ष श्री शांतिनाथजी खोत ने समिति का परिचय दिया। भूमि क्रय करने हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले सभी दातारों का सम्मान किया गया, जिनमें श्री चन्द्रकांत मोरची दंपति, तेरदाल (कर्नाटक) का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित राजकुमारजी बरमी, पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील एवं पण्डित राजेन्द्रजी उपाध्ये ने शुद्ध तेरापंथाम्नाय अनुसार सम्पन्न कराये।

इस समारोह को सफल बनाने के लिये पण्डित महावीरजी पाटील, पण्डित जिनचंदजी शास्त्री, पण्डित अनिलजी आलमान, श्री बालासाहेब वसवाडे, श्री शांतिनाथजी खोत, श्री अभिनन्दनजी पाटील, श्री प्रवीणजी पाटील, श्री दीपकजी चौगुले, श्री बालासाहेब चौगुले, श्री कीर्तिकुमारजी पाटील, श्री सुभाषजी भोजे, श्री प्रदीपजी पाटील, श्री प्रशांतजी पाटील, श्री राजीवजी पाटील, श्री दिग्विजयजी आलमान, श्री नाभिराजजी गंगाई, श्री दीपकजी अथणे, श्री नेमिनाथजी आलमान, सर्वोदय स्वाध्याय समिति के कार्यकर्त्ता एवं हेरले गांव के सभी साधर्मियों का बहुत योगदान रहा।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनचंदजी शास्त्री ने एवं शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन पण्डित सुरेन्द्रजी पाटील ने किया।

कोटा संभाग की तीर्थयात्रा संपन्न

दिनाँक 17 से 24 अक्टूबर तक अ.भा.जैन युवा फैडरेशन कोटा संभाग द्वारा तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया।

तीर्थयात्रा में कोटा, बिजौलिया, अड़िंदा पार्श्वनाथ, केसरिया पार्श्वनाथ, भिलौडा, चिंतामणि पार्श्वनाथ, देरोल (देवपुरी-52 जिनालय), तारंगाजी, उमताजी, चैतन्यधाम, वस्त्रापुर-अहमदाबाद, भावनगर, घोघा, सोनगढ, पालीताना, गिरनारजी, राजकोट, उमराला आदि स्थानों को सम्मिलित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जयकुमारजी बांरा, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विशेषजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित आशीषजी शास्त्री चिनौवा, पण्डित सोमिलजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित संदीपजी शास्त्री चैतन्यधाम आदि विद्वानों द्वारा प्रतिदिन दो प्रवचनों का लाभ मिला। तारंगाजी, चैतन्यधाम, सोनगढ एवं गिरनारजी में विधान का भी आयोजन किया गया। विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित तपिशजी शास्त्री एवं पण्डित संदीपजी शास्त्री ने संपन्न कराये ।

2 बसों एवं 3 छोटी गाड़ियों के माध्यम से हुई इस यात्रा में लगभग 115 यात्रियों ने भाग लिया। बसों में स्पीकर द्वारा प्रवचन, भक्ति, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

दीपावली पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

जयपुर (राज.) : यहाँ युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से दीपावली पर पटाखे विरोधी विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इस क्रम में 'दीपावली पर आतिशबाजी की सार्थकता या निरर्थकता' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता (प्रदूषण मुक्त दीपावली) एवं बिड़ला मंदिर, मोती डूंगरी, युनिवर्सिटी, जवाहरकला केन्द्र आदि अनेक प्रमुख स्थानों पर नुक्कड़ नाटक आदि कार्यक्रम आयोजित किये गये। पटाखों के दुष्परिणाम विषय पर लगभग 1100 वी.सी.डी. 7000 की संख्या में पोस्टर देशभर में भेजे गये।

इन कार्यक्रमों में जयपुर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने भाग लिया। **- संजय शास्त्री**

दीक्षान्त समारोह संपन्न

मङ्गलायतन अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ मङ्गलायतन विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षान्त समारोह दिनांक 2 नवम्बर को सानन्द संपन्न हुआ।

समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति एवं हिन्दी के सुप्रतिष्ठित कवि डॉ. गोपालदास नीरज ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम मंचासीन थे। इस प्रसंग पर विश्वविद्यालय कोर्ट के सदस्य तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

समारोह में विश्वविद्यालय ने इन्फोसिस के संस्थापक श्री एन. आर.नारायणमूर्ति को डॉक्टर ऑफ साइंस (डी.एससी.) एवं विश्व प्रसिद्ध सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खाँ को डी.लिट् की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। साथ ही 732 छात्रों को डिग्रियाँ प्रदान की गई।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

मुक्त विद्यापीठ की परीक्षा पद्धति में इस वर्ष से निम्नानुसार बदलाव किया गया है, अत: कृपया ध्यान देवें और उसी के अनुसार तैयारी करें।

मुक्त विद्यापीठ द्वारा जून माह में फस्ट सेमेस्टर एवं दिसम्बर माह में सैकण्ड सेमेस्टर की परीक्षा ली जावेगी; ताकि परीक्षार्थी एक ही वर्ष में एक कक्षा को उत्तीर्ण कर सके।

इसके अनुसार दिसम्बर, 2010 में निम्नानुसार परीक्षायें आयोजित होगी।

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा

प्रथमवर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-दो
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-तीन

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-दो
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : धर्म के दशलक्षण (70 अंक) + भक्तामर स्तोत्र (30 अंक)

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : रत्नकरण्डश्रावकाचार (केवल श्लोकार्थ) 150 श्लोक
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : रामकहानी (70 अंक) + आप कुछ भी कहो (30 अंक)।

द्वितीय वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

1. प्रथम प्रश्नपत्र : मोक्षमार्गप्रकाशक - एक से चार अधिकार तक
2. द्वितीय प्रश्नपत्र : नयचक्र - निश्चय व्यवहार प्रकरण तक
3. तृतीय प्रश्नपत्र : हरिवंशकथा (70 अंक) + भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ (30 अंक)।

जिन परीक्षार्थियों ने अपनी परीक्षा फीस अभी तक न भेजी हो तो कृपया शीघ्र भिजवायें।

ऋषभ शास्त्री ललितपुर को पीएच.डी.

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री ऋषभकुमार जैन पुत्र श्री जयकुमारजी जैन ललितपुर को डॉ. ए.डी. शर्मा के निर्देशन में 'भारतीय दर्शन में सर्वज्ञता की ज्ञान मीमांसा : जैन बौद्ध एवं पूर्व मीमांसा के संदर्भ में' विषय पर हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर से पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं वीतराग-विज्ञान समिति आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

शाकाहार पर भव्य नाटक का मंचन

मुम्बई : यहाँ ग्रांट रोड़ स्थित भारतीय विद्या भवन में गैर सरकारी संस्था पाल (पीपल फॉर एनिमल लिबरेशन) ने दिनाँक 13 नवम्बर को अनिल मारवाड़ी निर्देशित नाटक संकल्प का मंचन किया।

शाकाहार अपनाकर अनैतिक आचरण से दूर रहने का संदेश देनेवाले इस नाटक में सर्वज्ञ भारिल्ल, देवांग गाला, सुधर्म मुडल्गी, ज्ञायक समैया, अनुज जैन, आशीष महाजन, विवेक जैन, चेतन पवैया, अंकित जैन, आराध्य टडैया, प्रतीक शाह, नकुल जैन, नील हरिया, दर्शित जैन आदि कलाकारों ने अभिनय किया।

शाकाहार एवं जीव दया के उद्देश्य को लेकर कार्य कर रही संस्था **पाल** के संस्थापक सर्वज्ञ भारिल्ल ने बताया कि नाटक के माध्यम से आजकल शाकाहार के प्रति चल रही भ्रान्तियों का निराकरण किया जाता है। पाल के मुम्बई प्रमुख देवांग गाला ने बताया कि भगवान महावीर और महात्मा गांधी के देश में अहिंसा और शाकाहार की सख्त आवश्यकता है। जानवरों को भी इस पृथ्वी पर रहने का उतना ही अधिकार है, जितना कि मनुष्यों का और उन्हें अधिकार दिलाने के लिये हमें आगे आना होगा।

नवीन कृति का विमोचन

उदयपुर (राज.) : यहाँ हिरण मगरी सेक्टर-3 में दशलक्षण पर्व के अंतिम दिन डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री (प्रांतीय उपाध्यक्ष - अ.भा.जैन युवा फैडरेशन) द्वारा लिखित नवीन कृति 'आधुनिक बहू' का विमोचन श्री ख्यालीलालजी रोडावत एवं श्री दिलीपजी व दिनेशजी जैन ने किया। इस कृति का परिचय देते हुये श्री महावीरप्रसादजी ने कहा कि इस कृति में छोटी-छोटी दस एकांकियां हैं, जो उत्तम क्षमा से लेकर उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर आधारित हैं। ये एकांकियां मंच पर बहुत सहजता से मात्र 5 मिनट में प्रस्तुत की जा सकती हैं। कृति का मूल्य मात्र-5/- रुपये रखा गया है। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें

- डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, मो.नं.- 09784402231 / 9413114801

वीडियो डी.वी.डी. नि:शुल्क उपलब्ध

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा अगस्त माह में मुक्तागिरि में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल इत्यादि 32 विद्वानों के सानिध्य में द्वितीय विद्वत् गोष्ठी आत्मा के स्वपरप्रकाशक विषय पर संपन्न हुयी थी।

इस गोष्ठी की 22 घंटे की 5 वीडियो डी.वी.डी. आत्मार्थी साधर्मियों के लाभ हेतु संस्था द्वारा नि:शुल्क प्रदान की जा रही है। इच्छुक साधर्मी अपने नाम व पते के साथ पोस्टेज व्यय के रूप में 5 रुपये की 4 डाक टिकिट भेजकर डी.वी.डी. प्राप्त कर सकते हैं।

संपर्क : विराग शास्त्री, 50, कहान नगर सोसायटी, बेलतगांव रास्ता, लाम रोड़, पोस्ट-देवलाली, नासिक (महा.) 422101, फोन : 0253-2491531, 09373294684

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

विश्वासनगर-दिल्ली : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनाँक 14 से 21 नवम्बर तक 170 तीर्थङ्कर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के ग्रन्थाधिराज समयसार की गाथा-144 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रात: समयसार के कर्त्ताकर्म अधिकार एवं सायं न्यायदीपिका पर विशेष प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रतिदिन बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित महेन्द्रजी इन्दौर द्वारा संपन्न हुये।

विधान के आमंत्रणकर्त्ता एवं ध्वजारोहणकर्त्ता श्री रहतुमलजी नरेन्द्रकुमारजी जैन (बाहुबलि एन्क्लेव) थे। मुख्य कलश व पंचमेरु विराजमानकर्त्ता श्री वीरेन्द्रकुमारजी विकासजी जैन विश्वासनगर, प्रातिहार्य विराजमानकर्त्ता श्री सुनीलकुमारजी जैन विश्वासनगर एवं यज्ञनायक श्री वज्रसेनजी अशोकनगर थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री इन्दौर एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली ने संपन्न कराये।

अवश्य पधारें !

मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर तक होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में अवश्य पधारें।

डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति

नियमसार अनुशीलन भाग-2

छपकर तैयार है। **मूल्य 20 रुपये मात्र**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

4 व 5 दिसम्बर	भोपाल	शिलान्यास
12 व 13 दिसम्बर	मेरठ	जैन मिलन द्वारा व्याख्यानमाला
14 से 16 दिसम्बर	खतौली	जैन मिलन द्वारा अहिंसा गोष्ठी व प्रवचन
16 से 23 दिसम्बर	मंगलायतन	पंचकल्याणक
24 से 1 जनवरी,2011	इन्दौर (मालवा)	फैडरेशन यात्रा
2 से 4 जनवरी, 2011	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
15 से 20 जनवरी	उदयपुर	पंचकल्याणक
29 जनवरी से 4 फरवरी	भिण्ड	पंचकल्याणक